साहित्योत्सव
Festival of Letters 2023
11-16 मार्च 2023
नई दिल्ली
साहित्य अकादेमी
आज़ादी का अमृत महोत्सव
G20 भारत 2023 INDIA
Ministry of Culture
Government of India

दैनिक समाचार बुलेटिन
सोमवार, 13 मार्च 2023

संवत्सर व्याख्यान

साहित्य अकादेमी का वार्षिक संवत्सर व्याख्यान प्रख्यात लेखक, रचनात्मक विचारक तथा भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश, न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने "प्राचीन महाकाव्यों और ग्रंथों के मिथक : कानून और जीवन से संबंधित आधुनिक व्याख्या" विषय पर साहित्योत्सव 2023 के दौरान दिया। व्याख्यान जीवन मूल्यों के प्रति गहरी चिंता को दर्शाता है तथा साहित्यिक आंदोलन और वर्तमान साहित्यिक रुझानों के प्रति नवीन आयाम खोलता है। न्यायमूर्ति मिश्रा ने अपने व्याख्यान का आरंभ सिमोन वील (फ्रांसीसी दार्शनिक) के एक उद्धरण के साथ किया, "बौद्धिक व्यवस्था में, विनम्रता का गुण ध्यान की शक्ति से अधिक या कम नहीं है।" मिथक पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार मिथक वास्तविकता के विपरीत खड़े हैं, किंतु वे उसे पृथक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए चरित्र और घटना की एक संयुक्त अवधारणा को अपनाते हैं। उनके अनुसार, प्राचीन महाकाव्यों की अवधारणाओं तथा ग्रंथों की अवधारणा का कोई कालानुक्रमिक या विशिष्ट संदर्भ नहीं है। न्यायमूर्ति श्री मिश्रा ने अपने व्याख्यान में एकलव्य, गंगा पुत्र देवव्रत, कर्ण आदि से संबंधित महाभारत की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर चर्चा की। अपने व्याख्यान के अंत में न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने नोबेल पुरस्कार विजेता (2020) लुइस ग्लक की कुछ पंक्तियों को उद्धृत किया : "देन सडनली द सन वाज़ शाइनिंग/एंड टाइम वेंट ऑन,/इवन व्हेन देर वाज़ ऑलमोस्ट नन लेफ्ट/एंड द पर्सीव्ड बिकेम द रिमेम्बर्ड/द रिमेम्बर्ड, दी पर्सीव्ड।"

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष माधव कौशिक ने न्यायमूर्ति श्री दीपक मिश्रा को अंगवस्त्रम् और अकादेमी के प्रकाशन भेंट कर अभिनंदन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य में बताया कि आज साहित्य अकादेमी का स्थापना दिवस भी है। उन्होंने सभी सम्मानितगणों को स्थापना दिवस की बधाई दी।

आज के कार्यक्रम

आमने-सामने : पुरस्कृत लेखकों/विद्वानों के साथ प्रख्यात लेखकों का संवाद
वाल्मीकि सभागार, पूर्वाह्न 10.30 बजे

भाषा सम्मान अर्पण
वाल्मीकि सभागार, सायं 5.00 बजे

परिचर्चा : अनुवाद कला : सांस्कृतिक संदर्भ में चुनौतियाँ
व्यास सभागार, पूर्वाह्न 10.30 बजे

परिचर्चा : शब्द-संसार और मेरी कला
व्यास सभागार, अपराह्न 2.30 बजे

परिचर्चा : शिक्षा और सृजनात्मकता
तिरुवल्लुवर सभागार, पूर्वाह्न 11.00 बजे

आदिवासी लेखक सम्मिलन
तिरुवल्लुवर सभागार, अपराह्न 2.30 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम : ब्रज की होली, श्यामा ब्रज लोककला मंच द्वारा
मेघदूत मुक्ताकाशी सभागार-1, सायं 6.00 बजे

पूर्वोत्तरी : उत्तर पूर्वी एवं दक्षिणी लेखक सम्मिलन

साहित्योत्सव 2023 के दौरान 12 मार्च को पूर्वाह्न 10.30 बजे उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन का आयोजन तिरुवल्लुवर सभागार, रवींद्र भवन परिसर में किया गया। इस सम्मिलन का उद्घाटन प्रख्यात असमिया लेखक ध्रुव ज्योति बोरा ने किया, जबकि मुख्य अतिथि प्रख्यात हिंदी लेखिका मृदुला गर्ग थीं। प्रख्यात हिंदी साहित्कार कौशलनाथ उपाध्याय जी ने ध्रुव ज्योति बोरा का अंगवस्त्रम् से स्वागत किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में ध्रुव ज्योति बोरा ने पूर्वोत्तर के इतिहास का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि उत्तर-पूर्व भारत हमारे देश का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ दो अलग-अलग सभ्यताएँ एक साथ आई हैं। मंगोलियाई मूल के लोग पूर्वोत्तर में समग्र रूप से बहुसंख्यक हैं।

अपने वक्तव्य में लेखकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि लेखक को अपने व्यक्तिगत अनुभव से लिखना चाहिए। यदि एक लेखक अपने व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं लिखता तो वह सच्चा लेखक नहीं हो सकता। आगे भाषा पर बात करते हुए ध्रुव ज्योति बोरा ने भाषाओं के बीच के रिश्तों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक ओर असमिया भाषा जहाँ उत्तर भारत की कई भाषाओं के समीप है वहीं उसके अक्षर बाङ्ला भाषा के भी समीप हैं। उन्होंने असमिया भाषा को मैथिली, बाङ्ला, संस्कृत की बहन के रूप में माना। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज का अपना समाज है, अपनी संस्कृति, अपनी भाषा और विश्वास है। उन्होंने युवाओं के संदर्भ में कहा कि आज का युवा अंग्रेज़ी में पढ़ना पसंद करता है और वह अपनी भाषा से दूर जा रहा है। लेखन के बदलते परिदृश्य को लेकर उन्होंने कहा कि पूर्व में लेखन - समाज तथा समाज के वंचित वर्गों को ध्यान में रखकर किया जाता था, लेकिन आज का लेखक आत्मकथा लिखना ज़्यादा पसंद करता है।

मुख्य अतिथि मृदुला गर्ग ने अपने वक्तव्य में भाषा के विषय में कहा कि हमारे देश के लगभग हर लेखक ने उपन्यास, कहानी और कविता लिखने के लिए पश्चिमी संस्कृति, साहित्य और अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव लिया है, लेकिन पूर्वोत्तर में ऐसा नहीं है। आज भी पूर्वोत्तरवासी अपनी मौलिकता से जुड़े हुए हैं। पूर्वोतरी लेखक पश्चिमी भाषा और लेखन शैली की नक़ल नहीं करते हैं और किसी को भी उनके लेखन में कभी भी पश्चिम का स्पर्श नहीं मिल सकता है।

आगे अपने वक्तव्य में उन्होंने अनुवाद की बारीकी के बारे में अपने निजी अनुभव को साझा करते हुए कहा कि एक प्रकाशन गृह ने मेरी पुस्तक का अनुवाद करवाया और जब वह अनूदित पुस्तक मैंने पढ़ी तो मेरे मन में यह बात आई कि कैसे एक कृति का अनुवाद यदि सही न हो तो मूल तो कृति की आत्मा मर जाती है।

ऐसा अनुवाद होना चाहिए कि जिससे मूल भाव की हानि न हो।

'मेरी रचना-मेरा संसार' विषय पर केंद्रित प्रथम सत्र पूर्वाह्न 11.00 बजे शुरू हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी रचनाकार सुरेश ऋतुपर्ण ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि एक लेखक में अपने पाठकों को एक ऐसी दुनिया में ले जाने की क्षमता और ताक़त होती है, जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा है। लेखक अपनी रचनात्मकता, समाज से प्राप्त अनुभव, जैसे कई तत्त्वों को ध्यान में रखकर कहानी-कविता बुनता है एवं पाठक को एक अज्ञात दुनिया में हो रही गतिविधियों से अवगत कराता है। आगे उन्होंने कहा कि एक लेखक होने के नाते मैं इस सत्र का हिस्सा बनकर अभिभूत महसूस कर रहा हूँ और मुझे इन बेहद प्रतिभाशाली लेखकों के साथ मंच साझा करने में बहुत खुशी हो रही है।

अपनी लेखन-यात्रा को याद करते हुए उन्होंने बताया कि कॉलेज के दिनों से उनका लेखन शुरू हुआ था। उन्होंने कई दिलचस्प किस्से श्रोताओं को सुनाए। आगे उन्होंने कहा कि अभी तक जो भी लेखन किया है वह स्वतः स्फूर्त किया है अर्थात् कभी किसी रचना के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किया।

इस सत्र के प्रतिभागी के रूप में रश्मि नार्ज़री (बोडो), जितेंद्र श्रीवास्तव (हिंदी), यू सा जेन मोग (मोग), जयंत कृष्ण शर्मा (नेपाली) और एस. रंगनाथ (संस्कृत) ने सहभागिता की। लेखकों ने अपनी लेखन-यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कविता-पाठ भी किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मणिपुरी लेखक एन. किरणकुमार ने की तथा मणिकुंतला भट्टाचार्जी (असमिया), अरुणोदय साहा (बाङ्ला), अन्नपूर्णा शर्मा (अंग्रेज़ी), फिल्मेका मारबामियांग (खासी), सुरेंद्र टुडू (संताली) और ताकिर छतारी (उर्दू) ने कहानी-पाठ किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात राजस्थानी साहित्यकार मधु आचार्य 'आशावादी' ने की तथा देवकांत रामसियारी (बोडो), कुसुम चकमा (चकमा), केवल कुमार केवल (डोगरी), जॅयसिंह तोकबी (काबी), रतन कुमार महतो सत्याथी (कुरमाली), रूप लाल लिंबू (लिंबू), आभा झा (मैथिली), एम. तैयीबुर रहमान खान (मणिपुरी) तथा संजय पुरोहित (राजस्थानी) ने कविता-पाठ किया।

युवा साहिती : युवा भारत का उदय

साहित्योत्सव 2023 के दौरान साहित्य अकादेमी द्वारा 12 मार्च 2023 को पूर्वाह्न 10.30 बजे व्यास सभागार में 'मैं क्यों लिखता हूँ' विषय पर 'युवा साहिती : युवा भारत का उदय' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पाँच सत्र आयोजित किए गए। पहला सत्र 11 मार्च 2013 को हुआ था और बाक़ी चार सत्र 12 मार्च 2023 को संपन्न हुए।

प्रख्यात हिंदी लेखक चित्तरंजन मिश्र ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि लिखना अपने आप से संवाद करना है। जिसके पास संवेदना है वह लिखे बिना नहीं रह सकता है। अंदर से बेचैनी इतनी बढ़ जाती है तो उसका लिखना ज़रूरी हो जाता है। दुनिया की हर चीज़ पुरानी हो जाती है, लेकिन सैकड़ों-हज़ारों साल पहले लिखी रचना आज भी हमारे काम आती है। मीर, ग़ालिब, तुलसी, कालिदास आदि आज भी हमारे काम आते हैं। सीता, कुंती, द्रौपदी, ाकुंतला जैसी नायिकाएँ कभी पुरानी और अप्रासंगिक नहीं होंगी। रचना के रूप में खिला हुआ फूल कभी नहीं मुरझाता है। पंजाबी युवा लेखक मंजीत सिंह ने कहा कि मुझे नहीं पता कि मैं क्यों लिखता हूँ लेकिन बार-बार जब इन प्रश्नों से दो-चार हुआ तो समझ में आया कि हमारे अवचेतन में जो चीज़ें चलती रहती हैं उसकी कोई न कोई वजह होती है। मैं अपने दुख को जब किसी से बाँट नहीं पाता, किसी से कहने से झिझकता हूँ तो जो भी सोचता हूँ उसे लेखन द्वारा अभिव्यक्त करता हूँ। असमिया युवा कथाकार जिंटू गीतार्थ ने कहा कि वे किसी भी वाकये का बड़ी बारीक़ी से निरीक्षण करते हैं, उसके बारे में सोचते हैं फिर उसे शब्दों में उतारते हैं। उन्होंने बताया कि दो परिवारों के बीच पोल को लेकर हुई झड़प पर पहली कहानी 'मागुर' 2018 में लिखी थी। मैं समाज और मनोविज्ञान पर लिखता हूँ। डिफू समाज की संस्कृति को लेखन द्वारा लोगों तक पहुँचाने का सामाजिक दायित्व मेरा है। अंग्रेज़ी के लेखक निरंजन देव भारद्वाज ने कहा कि वह विषय का सूक्ष्मता से परीक्षण करने के बार उस पर विचार करते हैं फिर उसे शब्दों में व्यक्त करते हैं। भारत में प्रदूषण जैसी अनेक समस्याएँ हैं। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए लोग जागरूक हों, यह मेरा लेखकीय दायित्व है, मैं इसलिए लिखता हूँ।

हिंदी लेखक प्रांजल धर ने कहा कि सामाजिक स्थितियों की विषमता मेरे लेखन को गहरे तक प्रभावित करती है और मैं अपनी संवेदना के साथ उनपर अपनी रचनात्मक प्रतिक्रिया देता हूँ। कन्नड लेखक श्रीहर्ष सालीमठ, कश्मीरी के लेखक नदीम और ओड़िआ लेखक क्षेत्रबासी नायक ने कहा कि उनके लेखन का मुख्य विषय समाज, संस्कृति और प्रकृति है। अगला सत्र कहानी-पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता ओड़िआ लेखक बिजयानंद सिंह ने की तथा बिजित गोरा रामसियारी (बोडो), प्रणव सुखदेव (मराठी), कुलदीप शर्मा (संस्कृत), श्री उहा (तेलुगु) तथा जाकिर हुसैन (उर्दू) ने कहानी-पाठ किया। चतुर्थ सत्र 'लेखन : जुनून या व्यवसाय विषयक' था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी लेखिका मनीषा कुलश्रेष्ठ ने की तथा मौमिता (बाङ्ला), अभय सिंह भड़वाल (डोगरी), बसुंधरा रॉय (अंग्रेज़ी) तथा मोथी वार्के (मलयाळम्) ने आलेख-पाठ प्रस्तुत किया।

पंचम सत्र कविता-पाठ था जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात बाङ्ला कवि सुबोध सरकार ने की तथा हर्षवी पटेल (गुजराती), मन मीत सोनी (हिंदी), विल्सन कतील (कोंकणी), रूपम झा (मैथिली), ओकेंद्र खुंदोङबम (मणिपुरी), प्रतीक पुरी (मराठी), आरती ठकुरी (नेपाली), सुशीर कुमार स्वाइन (ओड़िआ), आशीष पुरोहित (राजस्थानी), शिवानी मुर्मू (संताली), समीक्षा लछवानी पेशवाणी (सिंधी) तथा सबरीनाथन (तमिळ्) ने कविता-पाठ किया।

व्यक्ति और कृति

साहित्य अकादेमी ने सन् 1989 में 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम के पूरक के रूप में 'व्यक्ति और कृति' कार्यक्रम शृंखला आरंभ की। इस कार्यक्रम में लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया जाता है। इसी शृंखला के अंतर्गत 12 मार्च 2023 को साहित्योत्सव 2023 में साहित्य अकादेमी ने अपने अकादेमी परिसर के वाल्मीकि सभागार में प्रख्यात उद्योगपति एवं लेखक सुनीलकांत मुंजाल को आमंत्रित किया, जिनके साथ प्रख्यात फ़िल्म निर्माता विनीत पांचाल ने संवाद किया। कार्यक्रम के आरंभ में माधव कौशिक, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्रम् और पुस्तकें भेंट कर सुनीलकांत मुंजाल का अभिनंदन किया तथा के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने विनीत पांचाल का स्वागत किया। प्रश्नोत्तर के दौरान विनीत पांचाल ने प्रश्न किया कि लिखने से पहले आप किनसे प्रभावित हुए। इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि बचपन से उन्हें पढ़ने की आदत थी। वे प्रतिदिन एक पुस्तक पढ़कर ख़त्म करने के बाद ही सोते हैं। उन्हें हर तरह की किताबें पढ़ने का शौक है, चाहे वो साहित्य की हो, इतिहास की हो या साहित्येतर, विज्ञान, या

अर्थशास्त्र की। दो चीज़ों से आप हमेशा कुछ नया सीखते हैं- एक तो विभिन्न स्थानों की यात्रा करने से और दूसरा किताबें पढ़ने से। उन्होंने कहा कि आप बच्चों को हमेशा अच्छी शिक्षा दें। उनमें सीखने का जज़्बा और जुनून होगा तो सफलता अपने आप मिलेगी। मैंने अपनी पुस्तक 'द मेकिंग ऑफ़ हीरो' अंग्रेज़ी में लिखी। इसका अनुवाद हिंदी में प्रकाशित हो चुका है। मैं ज़्यादातर अंग्रेज़ी में पढ़ता हूँ, लिखता हिंदी में हूँ और मैंने पढ़ाई पंजाबी में की है। उन्होंने यह भी कहा कि जो भी करो सही करो और सही कारण के लिए करो, सही मुद्दे के लिए करो। हमारी ज़िंदगी में लोगों और संबंधों की अहमियत होनी चाहिए। जब आप कोई नया काम करते हैं तो ज़रूरी नहीं है कि आप सफल ही होंगे। आप ग़लतियाँ करें तो उससे सीखें भी और अगर आप कोशिश करते रहेंगे तो कामयाबी ज़रूर मिलेगी। इसलिए आप आगे बढ़ें ओर अपने सपने को पूरा करें। कार्यक्रम के अंत में मुंजाल जी ने श्रोताओं के कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए।

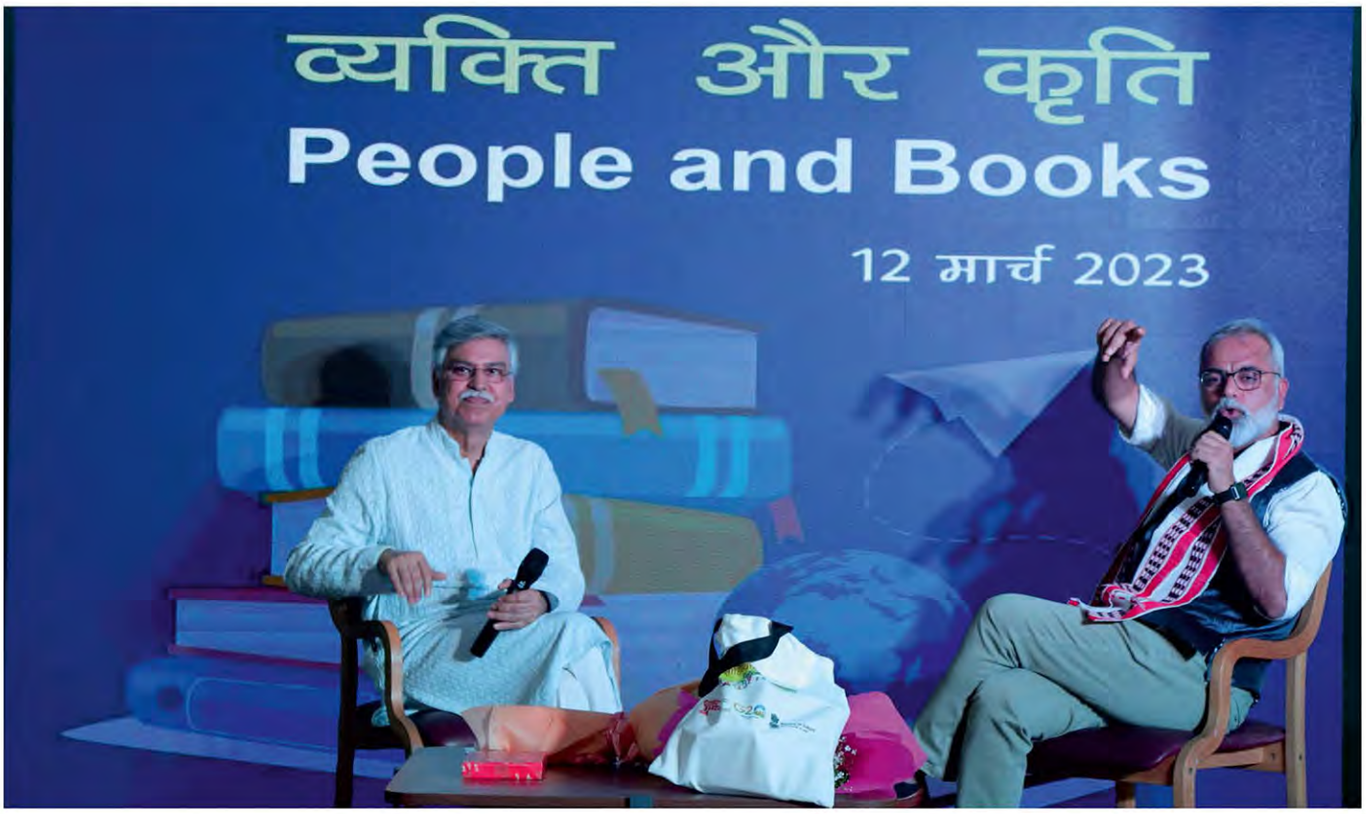

लेखक सम्मिलन

साहित्योत्सव के दौरान लेखक सम्मिलन का आयोजन वाल्मीकि सभागार, साहित्य अकादेमी परिसर, नई दिल्ली में किया गया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं ने सम्मिलन में अपने साहित्यिक अनुभव साझा किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की नव निर्वाचित उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने की। असमिया में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता मनोज कुमार गोस्वामी ने कहा कि उन्होंने चार दशक पहले कहानी लेखन शुरू किया था। उनके अनुसार, वह ऐसे लेखक हैं जो प्रेम, घृणा, मुस्कान और आँसुओं को बयां करते हैं, राजनीति की दुनिया और समाज के कई मुद्दों को कलमबद्ध करते हैं।

बाङ्ला में साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता श्री तपन बंद्योपाध्याय ने कहा कि उन्होंने सोचा, केवल कविताएँ लिखना उनके अनुभवों को पाठकों के साथ साझा करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा, इसलिए उन्होंने कहानी और कथा साहित्य लिखना शुरू किया। बोडो में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता सुश्री रश्मि चौधरी ने कहा कि उन्होंने शब्दों को उस दर्द को व्यक्त करने के साधन के रूप में उपयोग किया जिससे वे गुजरीं। क्योंकि उस दर्द को केवल वही महसूस कर सकती थीं जिसे उन्होंने कई महीनों तक सहा था। डोगरी में पुरस्कार विजेता वीणा गुप्ता ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्होंने उस समय तक प्रकाशित डोगरी साहित्य को अधिकतम पढ़ा था। इसलिए, भाषायी अध्ययन के साथ-साथ उन्होंने विशेष रूप से डोगरी कथा साहित्य और नाटक, और सामान्यता कविता और अन्य विधाओं के अध्ययन का भरपूर आनंद लिया।

गुजराती में पुरस्कृत गुलाममोहम्मद शेख ने अपने अतीत को याद किया और अपने भाषण में (दिवंगत) माला मारवाह द्वारा 'घेर जतन' के 3 से अधिक अनुवादों के कई अंश उद्धृत किए। उन्होंने कहा कि जैसे-जैसे जीवन ने अपने रहस्यों को उजागर किया और उन्हें अप्रत्याशित घटनाओं से अवगत कराया, उन्हें अपने दादा, माँ, भाई और अपनी गली के सामने एक अकेली दीवार के आस-पास की कहानियाँ मिलीं।

हिंदी में पुरस्कृत बद्रीनारायण ने कहा कि कोई भी पुरस्कार न केवल हमारी रचनात्मक यात्रा का सम्मान करता है, बल्कि हमारी रचनात्मकता के लिए नई चुनौतियाँ भी पैदा करता है। हमारी सबसे बड़ी चुनौती है कि हम रचना को चीज़ों में बदलने से बचाएँ। हमें रचनाओं को इस मायाबाज़ार में शामिल नहीं होने देना है, क्योंकि कविता के बिना कवि और समाज का जीवन व्यर्थ है। मुदनाकुडु चिन्नास्वामी, जिन्हें कन्नड में साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला है, ने अपनी पुरस्कृत कृति के बारे में जानकारी दी और कहा कि यह दार्शनिक अर्थों में अतीत की भव्यता के साथ वर्तमान भारत को प्रासंगिक बनाने से संबंधित है। उनके

ज़्यादातर निबंध फ्रांसिस बेकन के उच्च महत्त्व के आख्यानों से प्रभावित हैं।

कश्मीरी में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता फ़ारूक़ फ़याज़ ने कहा कि कश्मीरी भाषा में लिखित साहित्यिक परंपरा लगभग एक हज़ार वर्षों से चली आ रही है। उन्होंने आगे कहा कि ललद्यद से लेकर मौजूदा सदी तक, कश्मीरी भाषा में विविध विषयगत और प्रयोगधर्मी कविता रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बनी है।

कोंकणी में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता माया अनिल खरांगटे ने कहा कि जब पुर्तगालियों ने 450 वर्षों तक गोवा पर शासन किया, तो उन्होंने कोंकणी भाषा को नष्ट करने की बहुत कोशिश की, लेकिन गोवा के लोगों ने अपनी भाषा को नष्ट नहीं होने दिया। साहित्य लिखना नहीं छोड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि गोवा की स्वतंत्रता के बाद कोंकणी भाषा पूर्ण रूप से फलने-फूलने लगी।

मैथिली में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता अजीत आजाद ने कहा कि आज धरती अनेक प्रकार के संकटों का सामना कर रही है, न तो साँस लेने के लिए शुद्ध हवा है और न ही पीने के लिए शुद्ध पानी। रिश्ते निभाना दिन-ब-दिन कठिन होता जा रहा है। मेरा लक्ष्य इसे बचाना है और इसलिए मैं धरती को बचाने की कोशिश करते हुए कभी प्रेम लिखता हूँ तो कभी प्रतिरोध। प्रेम और प्रतिरोध मेरी कविताओं का मूल है। विडंबनापूर्ण परिस्थितियों से संघर्ष करना और थके हुए लोगों को संघर्ष के लिए प्रेरित करना ही मेरी कविताओं का उद्देश्य है। मलयाळम् में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता एम. थॉमस मैथ्यू ने कहा कि एक नवजात शिशु का अपनी माँ के गर्भ से निकलते ही उसका पहले पहल रोना उसकी घोषणा है कि यह दुनिया कितनी शत्रुतापूर्ण है जिसमें उसे रहना तय है। भाषा मनुष्य की मानवता से अविभाज्य है।

मणिपुरी में पुरस्कृत कोइजम शांतिबाला देवी ने कहा कि कविता प्रेमी होने के नाते, कविता के भीतर की सुंदरता ने उन्हें हमेशा मंत्रमुग्ध किया है। उनका मानना है कि कविता दिल की सबसे प्यारी प्रस्तुति है और कविता आत्माओं के बीच एक संबंध प्रदान करती है। मराठी में पुरस्कृत प्रवीण दशरथ बांदेकर ने अपने लेखन की जड़ों के बारे में बताया कि जिस स्थान पर हम पैदा हुए हैं वहाँ की संस्कृति और हो रहे परिवर्तन हमारे लेखन को प्रभावित करते हैं।

कार्यक्रमों की सूची

दिनांक	समय	कार्यक्रम	स्थान
14 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.30 बजे	अखिल भारतीय कवि सम्मिलन : एक पृथ्वी . एक परिवार . एक भविष्य	वाल्मीकि सभागार
14 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.30 बजे	परिचर्चा : नाट्य लेखन	व्यास सभागार
14 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखक सम्मिलन	व्यास सभागार
14 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आदिवासी लेखक सम्मिलन (जारी...)	तिरुवल्लुवर सभागार
14 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	नारी चेतना	तिरुवल्लुवर सभागार
14 मार्च 2023	सायं 5.00 बजे	लेखक से भेंट : उषाकिरण खान, प्रख्यात मैथिली एवं हिंदी लेखिका के साथ	तिरुवल्लुवर सभागार
14 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण	साहित्य अकादेमी सभागार, प्रथम तल
14 मार्च 2023	सायं 6.00 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम : क़व्वाली, निज़ामी ब्रदर्स द्वारा	मेघदूत मुक्ताकाशी सभागार-1
15 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.30 बजे	परिचर्चा : मीडिया, न्यू मीडिया और साहित्य	वाल्मीकि सभागार
15 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी एवं पश्चिमी लेखक सम्मिलन)	वाल्मीकि सभागार
15 मार्च 2023	सायं 5.00 बजे	कथासंधि : अब्दुस समद, प्रख्यात उर्दू कथाकार के साथ	वाल्मीकि सभागार
15 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखक सम्मिलन (जारी...)	व्यास सभागार
15 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : डिजिटल युग में प्रकाशन	व्यास सभागार
15 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	परिचर्चा : सिनेमा और साहित्य	तिरुवल्लुवर सभागार
15 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : भारत में आदिवासी समुदायों के महाकाव्य	तिरुवल्लुवर सभागार
15 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण (जारी...)	साहित्य अकादेमी सभागार प्रथम तल
15 मार्च 2023	सायं 5.00 बजे	इंडो-कज़ाक लेखक सम्मिलन	साहित्य अकादेमी सभाकक्ष, तृतीय तल
15 मार्च 2023	सायं 6.00 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम : साहित्य एवं अभिनय : पाठ से प्रस्तुति, जयंत कस्तुआर द्वारा	तिरुवल्लुवर सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आओ कहानी बुनें (बच्चों के लिए कार्यक्रम)	मेघदूत मुक्ताकाशी सभागार-1
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	परिचर्चा : विदेशों में भारतीय साहित्य	वाल्मीकि सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : साहित्य और महिला सशक्तीकरण	वाल्मीकि सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 11.00 बजे	परिचर्चा : मातृभाषा का महत्त्व	व्यास सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	परिचर्चा : संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति	व्यास सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.30 बजे	पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी एवं पूर्वी लेखक सम्मिलन)	तिरुवल्लुवर सभागार
16 मार्च 2023	अपराह्न 2.30 बजे	व्यक्ति एवं कृति : कैलाश सत्यार्थी, प्रख्यात समाज सुधारक एवं नोबेल पुरस्कार विजेता के साथ	तिरुवल्लुवर सभागार
16 मार्च 2023	पूर्वाह्न 10.00 बजे	राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण (जारी...)	साहित्य अकादेमी सभागार, प्रथम तल

**कार्यक्रमों में परिवर्तन संभव है।*

मीडिया सहयोगी

National | आकाशवाणी | FM BOLE TOH 91.1 FM Radio City A JAGRAN INITIATIVE

अन्य जानकारी के लिए देखें
https://sahitya-akademi.gov.in

पुस्तक प्रदर्शनी
पूर्वाह्न 10.00 बजे से सायं 7.00 बजे

Buy Books Online
Link:
http://sahitya-akademi.org.in/

साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
दूरभाष : 91-11-23386626/27/28
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

साहित्योत्सव
Festival of Letters 2023

Sahitya Akademi | Azadi Ka Amrit Mahotsav | G20 | Ministry of Culture, Government of India

11-16 March, 2023
New Delhi

Daily News Bulletin MONDAY, 13 March 2023

Samvatsar Lecture

The annual lecture of Sahitya Akademi, known as Samvatsar Lecture, is delivered by a distinguished writer and a creative thinker. This lecture reflects a deep concern for values and open up new vistas of thinking regarding a literary movement, current literary trends. In the Festival of Letters 2023, former Chief Justice of India, Justice Dipak Misra, delivered the Samvatsar Lecture, on "Myths from the Ancient Epics and Texts: Modern Interpretation having nexus with Law and Life". Justice Misra began his lecture with a quote of Simone Weil, French philosopher, "In the intellectual order, the virtue of humility is nothing more nor less than the power of attention." Talking about myth he said that he does not mean how it stands in contradistinction to reality, but he adopts a conjoint concept of character and incident or, to put differently, event and action. According to him, the concepts of ancient epics and conception of texts have no chronological or specific reference. They are fundamentally 'event-interest' centric and are also potentially understandable legal connectivity and attract the pearl of empathy towards the characters from many a spectrum. Justice Misra, in his lecture, discussed some important incidents from the *Mahabharata* relating to Ekalavya, Devavrata, the son of Ganga, Karna and so on. Concluding his lecture Justice

Misra recollected few lines from Louise Gluck, the Nobel Prize-winner, 2020: "Then suddenly the sun was shining/ and time went on, / Even when there was almost none left. / And the perceived became the remembered/ the remembered, the perceived."

Today's Programmes

Face to Face (Award Winners in Conversation with Eminent Writers/Scholars), Valmiki Sabhagar, 10.30 a.m.

Presentation of Bhasha Samman, Valmiki Sabhagar, 5.00 p.m.

Panel Discussion on Art of Translation : Challenges in Cultural Context, Vyas Sabhagar, 10.30 a.m.

Panel Discussion on World of Letters and My Art, Vyas Sabhagar, 2.30 p.m.

Panel Discussion on Education and Creativity, Tiruvalluvar Sabhagar, 11.00 a.m.

Tribal Writers' Meet, Tiruvalluvar Sabhagar, 2.30 p.m.

Cultural Event : Braj Ki Holi by Shyama Braj Lok Kala Manch, Meghdoot Open Air Theatre - 1, 6.00 p.m.

People and Books

As part of Festival of Letters, Sahitya Akademi organized today People and Books programme. the programmes held under this series, distinguished persons from interdisciplinary areas are invited to speak on the literary works that really inspired them or that they enjoyed reading. Sri Sunil Kant Munjal, renowned enterpreneur and writer, was invited to speak under the series of this programme. Sri Munjal is a second generation member of the family that founded the Hero Group and is the Chairman of Hero Enterprise.

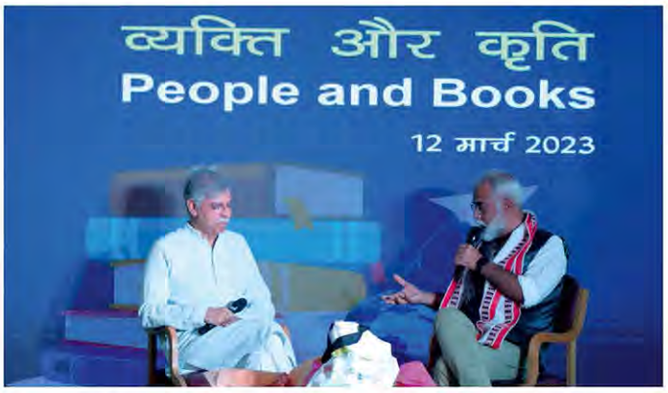

Sri Vineet Panchhi, writer, poet and motivational speaker, moderated the programme. Sri Munjal while answering a set of questions by Sri Panchhi, gave a brief account of his early life, how he grew up, his journey to become a successful enterpreneur and how he inculcated value system inspired by his elders in the family. He said, 'I am very happy to talk about industry, Hero Group, Global business, environment, disparity in public life rather than about myself, because when we talk about ourselves, the focus gets away from real issues. Talking about success mantras, he said, the most valuable asset for success is people we meet in our life, the kind of relationship and to maintain them over a period of time and our partnership with others. If you do right thing for right reason then you do not need to hide it. Talking on books, he said, "I try to finish a book that I start reading, in one night and raise questions that come to my mind to my friends, the next day. I have learnt a lot from my travel and constant reading and always found world of books fascinating, he further added. He gave a brief account of making of his compnay in his book titled *The Making of a Hero* which will soon be available in braille version too, besides in English and Hindi. He concluded through his message that it will be great if one turns the passion into profession.

Sri Madhav Kaushik, President and Dr K. Sreenivasarao, Secretary, Sahitya Akademi welcomed Sri Munjal with a packet of books and angvastram at the beginning of the programme.

Writers' Meet

The Sahitya Akademi Award-winners participated in the Writers' Meet at which they shared their literary experiences. Prof. Kumud Sharma, Vice President, Sahitya Akademi, presided over the function.

Sri Manoj Kumar Goswami, Sahitya Akademi Award-winner in Assamese said that he ventured writing short fiction four decades ago. According to him there are writers around chronicling love, hatred, smiles and tears, penning many mores of the world of politics and the society at large. The journalist in him reminded his presumptuous writer self an old adage.

Sri Tapan Bandyopadhyay, Sahitya Akademi Award-winner in Bengali said that he thought, writing only poems would not be enough to share my experiences with the readers. So he began to write short stories and fiction.

Ms Rashmi Choudhury, Sahitya Akademi Award-winner in Bodo, said that she began using words as a means to express the pain she was going through. It brought her the opportunity to participate as a Bodo poet in various programmes.

Smt. Veena Gupta, Sahitya Akademi Award-winner in Dogri, sharing her experiences said that she had read whole of the Dogri literature published uptill that period. So, along

with the linguistic study of the language she enjoyed a lot the study of Dogri Fiction and Drama in particular and poetry and other genres in general.

Gulammohammed Sheikh, Sahitya Akademi Award-winner in Gujarati, reminisced his past and quoted all excerpts from the 3+ translations of *Gher Jataan* by (late) Mala Marwah, in his speech. He said that as life unfolded its secrets and exposed him to unexpected events, he found stories around his grandfather, mother, brother and a lonely wall in front of his lane.

Badri Narayan, Sahitya Akademi Award-winner in Hindi, said that any award not only honors us and our creative journey, but also creates new challenges for our creativity. Our biggest challenge is not to allow creation to turn into things and not to allow our creations to be included in this maya bazaar. Because without poetry, the life of the poet and the society is to live as if not to live.

Mudnakudu Chinnaswamy, Sahitya Akademi Award-winner in Kannada, briefed about his award-winning book and said that it deals with contextualizing present India with the grandeur of the past in a philosophical sense. The essays are mostly influenced by Francis Bacon's narratives of high significance in short essays.

Farroq Fayaz, Sahitya Akademi Award-winner in Kashmiri, said that the written literary tradition in Kashmiri language is almost stretched over one thousand years. He further said that from Lal Ded onwards till the end of the 19th Century, poetry with diverse thematic and formalistic experimentation remained the predominant mode of creative expression in Kashmiri language.

Maya Anil Kharangate, Sahitya Akademi Award-winner in Konkani, said that when Portuguese ruled Goa for 450 years, they tried a lot to destroy the Konkani language, but the people of Goa did not allow their language to be destroyed, did not stop writing. As a result of this, after the independence of Goa, the Konkani language started to flourish completely.

Ajit Azad, Sahitya Akademi award-winner in Maithili, said that today the earth is facing many kinds of crises, there is neither pure air to breathe nor pure water to drink, it is becoming increasingly difficult to maintain relations. My aim is to save it and that's why while trying to save the earth, sometimes I write love and sometimes resistance. Love and resistance are the origin of my poems. To fight against the ironic situations and to inspire the tired people to fight is the aim of my poems.

M. Thomas Mathew, Sahitya Akademi Award-winner in Malayalam, said that the first cry of a new born baby coming out of the coziness of its mothers' womb is its declaration that how hostile is the world in which it is destined to live. Attempts of an offspring to twins around the mothers' body and clinging on to her dress is its affirmation that the umbilical cord is never broken. The primary function of language is the same affirmation. Language is inseparable from the humanness of man, and that is why man is defined as Language Animal.

Koijam Shantibala Devi, Sahitya Akademi Award-winner in Manipuri, expressed that being a lover of poetry,

the beauty within poetry has always mesmerised her. She believes, poetry is the sweetest renderings of the heart and poetry provides a connection between souls. In poetry, one finds devotion, worship, sacrifice and faith.

Pravin Dasharath Bandekar, Sahitya Akademi Award-winner in Marathi, contemplating over the roots of his writing, said that the place where we are born, its culture and the transformations taking place over the years influence our writing. As far as he is concerned, his sensibility has been deeply rooted in his soil and therefore, at the outset it is inevitable to speak about it.

KB Nepali, Sahitya Akademi award-winner in Nepali, said that he is

impressed by Mahakavi Lakshmi Prasad Devkota's Munna Madan, he got attached to literature from the year 1955-56 and started writing some works, then his works sarted benig published in many magazines and books from 1960 and 1965. Inspired and encouraged by the readers, he got fully involved in writing in literature and started writing.

Gayatribala Panda, Sahitya Akademi Award-winner in Odia, opined that an award is not meant for a writer but for the literary creation. She further said that poetry does not aspire to change the society overnight. It is also not the responsibility of the poet to resolve issues. It, however, can shake the conscience of the reader, can effect limited change and impact the society to that extent.

Sukhjit, Sahitya Akademi Award-winner in Punjabi, shared his personal experiences emphasizing his childhood spent amongst farmers in rural places. He said that it was his parents' songs and fables that inspired him to write and brought him close to life.

Janardan Prasad Pandey 'Mani', Sahitya Akademi award-winner in Sanskrit, said that Sanskrit language is the oldest language of the world. Even in the present century Sanskrit is being written in various genres. Where scriptures have been written in Sanskrit, literature has also been written. The overall anomalies, coherences, situations of the world nation and society are being reflected in Sanskrit literature and are happening, because Sanskrit poet is beyond limitations. Sanskrit is being written in all the genres of today's era.

Jagannath Soren (Kajli Soren), Sahitya Akademi Award-winner in Santali, remembering his childhood, said that during the early 1960s when the cultural movement towards conservation and preservation of Santali language and literature was brewing among the indigenous community, poets and songwriters, such as Guhiram Hembram, Sarada Prasad Kisku and many others used to travel from one village to the other, empowering young minds to take pride in their cultural heritage. Like many others, he had also been influenced during these times and had started writing songs from a young age.

Kanhaiyalal Lekhwani, Sahitya Akademi award-winner in Sindhi, said that Sindhi is a major developed language of the Indian subcontinent. It is a very rich language from the point of view of literature, which has a history of more than a thousand years. At the beginning of each period of the development of Sindhi literature, the political and the cultural conditions have been described in detail, due to which in the particular period literary conventions can easily be understood.

M. Rajendran, Sahitya Akademi Award-winner in Tamil, spoke about his award-winning book *Kala Pani*. He said that in his book he has narrated the 66-days ship-voyage to Penang and Sumatra islands. He further stated that while writing a historical novel a writer has to face two challenges: one is, he has to write the known facts which may not like by some, and the second is, a historical novel will turn out to be a compilation of names, years and incidents.

Madhuranthakam Narendra, Sahitya Akademi Award-winner in Telugu, said that he had found a never ending competition between life and literature. By the time a writer captures a truth, the same truth would be transformed and might have taken a different and unexpected shape and thus the life scoffs at literature. He

further said that that a writer should modernize himself by learning and adopting new methods.

Anis Ashfaq, Sahitya Akademi Award-winner in Urdu, remembered his literary journey which began at the tender age of 15, acknowledging his mother as his first teacher. He said that he firmly believes in traditional tools formed by our own theorists rather than western principles which are often so confusing and overlapping. So modernism, post modernism and deconstruction, etc. do not have much importance for me. My sole principle to judge any piece of creative writing is (not what to say) how to say.

Anuradha Roy, Sahitya Akademi award-winner in English, and Sri Kamal Ranga, Sahitya Akademi award-winner in Rajasthani, could not attend the Writers' Meet. Their papers were distributed among the audience. Prof. Kumud Sharma, concluded the Meet and thanked all the awardees and the present literature lovers.

Panel Discussion on Diplomacy and Literature

A Panel Discussion on "Diplomacy and Literature" was held at 2.30 p.m., at Valmiki Sabhagar. Sri Amarendra Khatua, well-known Career Diplomat, who writes in Odia, English, Hindi and Spanish, chaired the panel discussion. Dr. K. Sreenivasarao, Secretary, Sahitya Akademi, introduced the diplomats to the audience. He pointed out that in the history of the Akademi, diplomacy has been first time included as a topic of discussion. Sri Khatua as the chair said that literature can be used as a tool for peace by a diplomat. He placed a few exciting questions for the following speakers, viz, why do they write, their writings as a diplomat, their personal life, professional life and life as a writer. Ambassador Suresh Goel emphasized that diplomacy is all about understanding people. Travelling which is part of a diplomat's life, gives ample opportunity to him/her to understand people and reflect that into their writings. Sri Abhay K. said that he is exclusively a poet. He said that ambiguity, brevity, conciseness and dialogue are a few elements essential to diplomacy and poetry as well, which he has been labouring to put in his creations. Sri Arun Sahu said that diplomacy teaches one how to say the things which are otherwise hard to speak, diplomacy is what is between the lines. He also pointed out that thorough editing is really the key to good writing. Ambassador Anju Ranjan said that for the role of a diplomat she often had to stay away from her family, and the pain of separation she faced, she has been saving and securing in her writings. Ambassador Vidisha Maitra said that she has yet not produced literature but has been a thorough and constant consumer of it. She has used consumption of literature as a tool during her life as a diplomat, for connecting with new places, new people and new cultures.

Purvottari: North-Eastern and Southern Writers' Meet

As part of the Festival of Letters 2023, a "Purvottari: North-Eastern and Northern Writers' Meet", was held at 10.30 am. at Tiruvalluvar Sabhagar. Sri Dhruba Jyoti Borah, eminent Assamese writer and novelist inaugurated the programme. In his inaugural address, Sri Borah said that North-east India is one area of our country where two distinct civilizations have come together. People of Mongolian origin, constitute the majority in the North East as a whole. This dominance has played a vital role in shaping as well as limiting writers from the Northeast. Writers should write from their personal experience or else, as writers, they won't be truthful. Being truthful in your work is the key to becoming a good writer.

Smt. Mridula Garg, eminent Hindi writer, and the Chief Guest of the Meet, believes, that almost every writer from our nation has adopted western culture, literature and language to write novels, stories, and poems. The Northeast always sticks to their originality and loves their language and culture and also enjoy writing in their own language. They do not copy western language and writing styles and one can never find any touch of west in their writings, and that is the beauty of writers from the Northeast.

The first session of the Meet, started at 11.30 a.m., devoted to a Panel Discussion on "My Creation: My Words" was chaired by Sri Suresh Rituparna, eminent Hindi poet. Sri Rituparna from the chair said that writer has the potential and strength to take his/her readers to a world they have never seen. The writer uses his/her creativity, experiences gained from society, poverty, and many more obstacles and weaves a story, creating a poem which is spread across borders and make it reach people of different caste, creed and language and make them aware of what's happening in the world unknown to them. Being a writer myself I feel overwhelmed to be a part of this session and I am very happy to share the stage with these extremely talented young writers. The participants of this session--Rashmi Narzary (Bodo), Jitendra Shrivastava (Hindi), U Sa Jen Mog (Mog), Jayanta Krishna Sarmah (Nepali) and S. Ranganath (Sanskrit)— shared their personal experiences as writers and read out their respective write-ups.

The second session of the Meet, devoted to a Short Story Reading session, began at 2.30 p.m., was chaired by N. Kirankumar Singh, eminent Manipuri writer. Monikuntala Bhattacharjya (Assamese), Arnoday Saha (Bengali) Annapurna Sharma (English), Filmeca Marbamiang (Khasi), Surendra Tudu (Santali) and Tariq Chhatari (Urdu) read out their stories.

The third session of the Meet, ment for Poetry Reading, began at 4.00 p.m., was chaired by Madhu Acharya 'Ashawadi", eminent Rajasthani poet and journalist.

Deva Kanta Ramachiary (Bodo), Kusum Chakma (Chakma), Kewal Kumar Kewal (Dogri), Joysingh Tokbi (Karbi), Ratan Kumar Mahato Satyarthi (Kurmali), Rup Lall Limboo (Limboo), Abha Jha (Maithili), M. Taiyeebur Rahman Khan (Manipuri), and Sanjay Purohit (Rajasthani) recited their poetry.

Yuva Sahiti: The Rise of Young India (Contd...)

In continuation of Yuva Sahiti: The Rise of Young India, which was commenced on 11 March 2023, the second session, devoted to "Why Do I Write?" was chaired by Sri Chittaranjan Mishra, eminent Hindi poet and critic. Jintu Gitarth (Assamese), Niranjan Dev Bharadwaj (English), Sonnet Mondal (English), Pranjal Dhar (Hindi), Sriharsha Salimath (Kannada), Nadim (Kashmiri), Kshetrabasi Naik (Odia), and Manjeet Singh (Punjabi) took part in this session and presented their papers. Chittaranjan Mishra, concluding the session appreciated the perception of all the young writers and requested them to target for greater mailstones to turn.

The third session commenced at 12.30 p.m. devoted to "Short Story Reading" was chaired by Sri Bijayanand Singh, noted Odia writer. Bijit Gwra Ramchiary (Bodo), Pranav Sakhadeo (Marathi), Kuldeep Sharma (Sanskeit), Sri Uha (Telugu) and Zakir Hussain (Urdu) read out their stories with translations in the session.

The fourth session started at 2.30 p.m., was devoted to "Writing: Passion or Profession?". Sri Manisha Kulshreshtha, eminent Hindi writer, chaired the session. Moumita (Bengali), Abhai Singh Bhadwal (Dogri), Basudhara Roy (English) and Mothy Varkey (Malayalam) were the participants of the session.

The fifth and last session of the Yuva Sahiti, was meant for Poetry Reading was chaired by Subodh Sarkar, and eminent Bengali poet and writer. The participants of the session —Harshvi Patel (Gujarati), Man Meet Soni (Hindi), Wilson Kateel (Konkani), rupam Jha (Marathi), Okendro Khundongbam (Manipuri), Pratik Puri (Marathi), Arati Thakuri (Neplai), Sushir Kumar Swain (Odia), Ashish Purohit (Rajasthani), Shiwani Murmu (Santali), Sameeksha Lachhwani Peswani (Sindhi) and Sabarinathan (Tamil), recited their poems.

Sahitya Akademi Book Exibition

Schedule of Events

Date	Time	Event	Venue
14 March 2023	10.30 a.m.	All India Poets' Meet : One Earth• One Family• One Future•	Valmiki Sabhagar
14 March 2023	10.30 a.m.	Panel Discussion on Playwriting	Vyas Sabhagar
14 March 2023	2.30 p.m.	LGBTQ Writers' Meet	Vyas Sabhagar
14 March 2023	10.00 a.m.	Tribal Writers' Meet (Contd...)	Tiruvalluvar Sabhagar
14 March 2023	2.30 p.m.	Nari Chetna	Tiruvalluvar Sabhagar
14 March 2023	5.00 p.m.	Meet the Author with Usha Kiran Khan, Eminent Maithili & Hindi Writer	Tiruvalluvar Sabhagar
14 March 2023	11.00 a.m.	National Seminar on Memories of Epics, Indian Independence Movement & Nation Building	Sahitya Akademi Auditorium, 1st Floor
14 March 2023	6.00 p.m.	Cultural Event : Qawwali by Nizami Brothers	Meghdoot Open Air Theatre - 1
15 March 2023	10.30 a.m.	Panel Discussion on Media, New Media and Literature	Valmiki Sabhagar
15 March 2023	2.30 p.m.	Purvottari (North-Eastern and Western Writers' Meet)	Valmiki Sabhagar
15 March 2023	5.00 p.m.	Kathasandhi with Abdus Samad, Eminent Urdu Fiction Writer	Valmiki Sabhagar
15 March 2023	10.00 a.m.	LGBTQ Writers' Meet (Contd...)	Vyas Sabhagar
15 March 2023	2.30 p.m.	Panel Discussion on Publishing in Digital World	Vyas Sabhagar
15 March 2023	11.00 a.m.	Panel Discussion on Cinema and Literature	Tiruvalluvar Sabhagar
15 March 2023	2.30 p.m.	Panel Discussion on Epics of Tribal Communities in India	Tiruvalluvar Sabhagar
15 March 2023	10.00 a.m.	National Seminar on Memories of Epics, Indian Independence Movement & Nation Building (Contd...)	Sahitya Akademi Auditorium, 1st Floor
15 March 2023	5.00 p.m.	Indo-Kazakh Writers' Meet	Sahitya Akademi Conference Hall, 3rd Floor
15 March 2023	6.00 p.m.	Cultural Event : Sahitya Evam Abhinaya : Text to Performance by Jayant Kastuar	Tiruvalluvar Sabhagar
16 March 2023	10.00 a.m.	Spin-a-Tale (Programme for Children)	Meghdoot Open Air Theatre - 1
16 March 2023	11.00 a.m.	Panel Discussion on Indian Literature Abroad	Valmiki Sabhagar
16 March 2023	2.30 p.m.	Panel Discussion on Literature and Women Empowerment	Valmiki Sabhagar
16 March 2023	11.00 a.m.	Panel Discussion on Importance of Mother Tongues	Vyas Sabhagar
16 March 2023	2.30 p.m.	Panel Discussion on Sanskrit Language and Indian Culture	Vyas Sabhagar
16 March 2023	10.30 a.m.	Purvottari (North-Eastern and Eastern Writers' Meet)	Tiruvalluvar Sabhagar
16 March 2023	2.30 p.m.	People and Books with Kailash Satyarthi, Renowned Social Reformer & Nobel Laureate	Tiruvalluvar Sabhagar
16 March 2023	10.00 a.m.	National Seminar on Memories of Epics, Indian Independence Movement & Nation Building (Contd...)	Sahitya Akademi Auditorium, 1st Floor

**Schedule of events is subject to change.*

Media Partner

National | आकाशवाणी | FM BOLE TOH 91.1 FM Radio City A JAGRAN INITIATIVE

for further details visit :
https://sahitya-akademi.gov.in

Book Exhibition
10:00 am to 7:00 pm (Daily)

Buy Books Online
Link:
http://sahitya-akademi.org.in/

SAHITYA AKADEMI
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001
Telephone: 91-11-23386626/27/28
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in